

# Case Study on Homeless



Submitted to –Delhi Urban Shelter  
Improvement Board(DUSIB)

Reg ID - 12552

Submitted by-Anil kumar (student)

Department of journalism

Delhi College of Arts & Commerce(DCAC)

University of Delhi

Supported by –PRAYAS JAC SOCIETY

## केस स्टडी का विषय सूची

1. रैन-बसेरा: एक परिचय
2. एन.जी.ओ. की भूमिका
3. दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड की भूमिका
4. केस-स्टडी का उद्देश्य
5. केस-स्टडी करने का तरीका
6. बेघर का सारांश
7. बेघर का दिनचर्य
8. भविष्य में अपने जीवन से उम्मीद (चाह)
9. रैन बसेरा की पहुंच को बढ़ावा देने के लिए सुझाव
10. बेघरो की प्रमुख समस्याएं  
सफाई की समस्या  
नशा की समस्या  
बिना घर के रहने पर होने वाली परेशानियां। चुनौतियां  
बच्चों के साथ होने वाली परेशानियां  
समान चोरी होने का डर
11. सरकार तथा एनजीओ को बेघर के लिए पहचान पत्र निर्गत करने  
का सुझाव
12. चिकित्सा की सुविधा के लिए सुझाव

13. काम की व्यवस्था के लिए सुझाव
14. सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुझाव
15. बेघर के काम के लिए सुझाव
16. सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुझाव
17. बेघर की संख्या कम करने का सुझाव
18. केयर टेकर के लिए सुझाव
19. दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड को सुझाव
20. रैन-बसेरा में पई गई कमीयां
21. निष्कर्ष
22. बेघर का सहमत प्रपत्र

### रैन बसेरा : एक परिचय:-

रैन बसेरा मूल रूप से बेघर लोगों के रहने का स्थान है। ये बेघर बच्चे, बूढ़े, युवा, युवती, महिलाएं, अपंग, विकलांग कोई भी हो सकते हैं। रैन बसेरा में वैसे लोग रहते हैं जो कचड़ा बिनने का काम, रिक्शा-ढेला चलाने का काम, भिख मांगने का काम, शादी-पार्टियों में काम करते हैं। इन बेघर के लिए सरकार शेल्टर, अस्थाई तंबू, नाश्ता, पानी, चाय, दवा, पहचान पत्र, बैंक खाता, राशन कार्ड, जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराती है। बेघर लोग पहले खुले आसमान के नीचे, प्लाईओवर के नीचे पट्टरीयों पर, सड़कों के किनारे, पाकों में सोते थे लेकिन जब से सरकार इस पर जोर दिया है तब से ए लोग शेल्टरों में रहने लगे हैं। कई लोग इनमें से सच में

बेसहारा है, लाचार है, मजबूर है लेकिन ज्यादातर लोग इसमें ऐसे नहीं हैं। बहुत से लोग शारीरिक रूप से सक्षम भी हैं। शारीरिक रूप से सक्षम होने के बावजूद भी कोई काम नहीं करना चाहते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि हमें रहने के लिए आवास (शेल्टर) पहनने के लिए कपड़ा, खाने के लिए दान के रूप में खाना, रोग/बिमारी के लिए दवाएं भी निशुल्क मिल जाता है। लेकिन मूलभूत सुविधाओं में से शिक्षा नहीं मिल पाता है जिसके अभाव में भटकते रहते हैं। यदि शिक्षा इन्हें मिल जाता है तो इनके जिंदगी में बेहतर की उम्मीद की जा सकती है। शेल्टर में रहने वाले बेघर प्रत्येक दिन का 100-500 रूपया तक अर्जन कर लेते हैं और खा-पी कर कुछ पैसा भी जमा कर लेते हैं लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है। लगभग 90 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो रोज का 100-500 रूपया तक कमाते हैं लेकिन अधिकतर पैसा का उपयोग नशा सेवन के लिए करते हैं। नशा सेवन के बाद इन्हें कुछ भी पता नहीं होता जहां कहीं जगह मिला वहां सो जाते हैं। यदि गौर से देखा जाए तो ऐ रैन बसेरा खासकर शहरों में इसकी जरूरत इसलिए पड़ी थी कि वे लोग जो शहरों में रोजगार, चिकित्सा या फिर किसी अन्य काम के लिए आते हैं उनको रहने या ठहरने की जगह नहीं मिल पाती थी। ऐसे लोगों को ठहरने के लिए रैन-बसेरा की व्यवस्था की गई थी। वर्तमान समय में अधिकतर बेघर रैन बसेरा को अपने घर की तरह उपयोग करते हैं। बात जैसे ही सर्द ऋतु की आती है तो उस समय खुले आसमान के नीचे सोने वाले लोगों को देख रोगटे खड़े हो जाते हैं। कई बेघर को ठंड लगने के कारण जान चली जाती है। जैसे ही मीडिया इन पर खबर दिखाती है तो लोगों का ध्यान इन बेघरों की तरफ जाती है। रैन-बसेरा को चलाने के लिए गैर-सरकारी संगठन

(एनजीओ) की अहम भूमिका रही है। एनजीओं के बिना इन बेघरों की देखरेख की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

### **NGOS की भूमिका इन बेघर लोगों के जीवन में।**

सरकार की योजनाओं को जमीनी स्तर पर लाने का श्रेय अगर किसी को जाना चाहिए तो वह गैर सरकारी संगठन। जहां एक ओर इस कलियुग में लोग अपनी माता-पिता की सेवा सही ढंग से नहीं कर पाते हैं वहीं दूसरी ओर इन एनजीओ में काम करने वाले कार्यकर्ता ऐसे भी हैं जो बेघरों की देख-रेख के लिए जी-जान (तन-मन) से लगे होते हैं। नशे के हालत में पड़े बेघर, मौत से मुकाबला कर रहे हैं बेघर को एनजीओ के कार्यकर्ता जीवनदान देने का काम करते आ रहे हैं। इन बेघरों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कि कुछ कंबल रूपया-पैसा की लालच में खुले आसमान के नीचे ही सोना पसंद करते हैं। कई बेघर एक दिन में कई कंबल जमा कर लेते हैं और इसे बेच देते हैं। ऐसे कुछ बेघर इसे अपना जीविकोपार्जन का साधन समझने लगे हैं। आज जरूरत आ पड़ी है इन्हें जागरूक कर इनके जीवन के मुख्य धारा की ओर जोड़ने का। बेघरों के साथ सबसे बड़ी समस्या नशा की होती है। वे अपने कमाई का अधिकतर हिस्सा नशा में खर्च कर देते हैं। इन बेघरों के पास कोई काम नहीं होता है जिससे कि वह खाली समय को बिताने के लिए नशा का सेवन करते हैं। एक बार नशा का खुराक ले लेने पर 12 घंटा तक नशा का अंश इनके शरीर में बना रहता है। जिससे वे आसानी से 12 घंटे तक सो जाते हैं। नशा की हालत में पड़े इन बेघरों को NGOs के कार्यकर्ता इन्हें रैन बसेरा तक लाने का काम करते हैं। अगर इन बेघरों में से कोई बिमार होता है तो उन्हें अस्पताल में भर्ती कराते

है। अस्पताल से छुटने के बाद इन्हे मेडिकल रिकवरी सेंटर में रहने, खाने-पिने की व्यवस्था दवा की व्यवस्था करते हैं। बेघरों के लिए पहचान-पत्र, बैंक खाता, राशनकार्ड भी बनाने का काम करती है ये एनजीओ।

#### **दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड की भूमिका :**

दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड इन बेघरों के लिए शेल्टर निर्माण, बिजली, पानी, दवा, शौचालय आदि की व्यवस्था के लिए फंड जारी करती है। इसके साथ ही अन्य सरकारी संस्थान से विनमय तथा ताल-मेल की व्यवस्था करती है। रैन-बसेरा की निगरानी भी करती हैं। दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड बेघरों के लिए काम करने वाली गैर सरकारी संगठन को पैसा देती है जिससे एनजीओ बेघरों के लिए देख-रेख की जिम्मेदारी लेती है। इसके साथ आश्रय सुधार बोर्ड विभिन्न सरकारी संगठन को सेवाओं के लिए आदेश देने का भी काम करती है।

#### **पुलिस की भूमिका :**

पुलिस हमेशा आपातकालिन स्थिति में इन इनजीओ कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम करती है। बेघरों की सुरक्षा के साथ-साथ बेघर को रैन-बसेरा तक पहुंचाने का काम करता है।

#### **अन्य समाजिक संगठन :**

अन्य समाजिक संगठन इन बेघरों को खाना, कंबल, कपड़ा, दवाएं उपलब्ध करती है। इन सभी संगठन के अलावा दिल्ली जल बोर्ड पानी उपलब्ध कराने का काम करती हैं, डीडीए जमीन उपलब्ध कराती है। दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य संगठन चिकित्सा

उपलब्ध कराने का काम करती है। निर्वाचन आयोग इन बेघरों के लिए मतदाता पहचान पत्र बनाने का काम करता है। राष्ट्रीयकृत बैंक इन बेघरों के लिए खाता खोलने का काम करता है जिससे कि ये बेघर अपने भविष्य के लिए पैसा जमा कर सकें। कई बार इन बेघरों को पैसा चोरी हो जाता है क्योंकि इनके पास पैसा जमा करने का कोई साधन नहीं होता है। पिछले कुछ वर्षों से ये सभी सरकारी और गैर सरकारी संगठन इन बेघरों के लिए काम करती आ रही है।

### केस स्टडी का उद्देश्य

केस स्टडी का उद्देश्य यह है कि मैं इन बेघर लोगों के बारे में व्यक्तिगत रूप से जान सकूँ। इनके बेघर होने का क्या कारण है? इसके पिछे कौन जिम्मेवार है? (इनका समाज, इनका घर या गरीबी या फिर कोई अन्य कारण)। आखीर कौन सी ऐसी मजबूरी आ गई इनके जीवन में जिससे कि इनको अपना घर छोड़कर बेघर होना पड़ा। इतनी सुविधाएं होने के बाद भी कई साल से शेल्टर की शरण में ही क्यों अपना जीवन यापन कर रहे है। घर वालों से बिछुड़ कर क्यों करना चाहते है? घर से बिछर कर रहने के पिछे क्या कारण है? गंदगी में ये बेघर क्यों रहना चाहते है? एक आम आदमी को बिना पैसा के दिल्ली जैसे शहरों में एक भी रह पाना कठिन है वहीं ये बेघर लोग बिना पैसा के कई महीना, साल तक गुजारा कैसे कर लेते हैं। दान में मिला हुआ खाना या अन्य सामान पर क्यों आश्रित है, काम करके क्यों नहीं खाना चाहते है। शारिरीक रूप से सक्षम होने के बावजूद इन्हें दूसरों पर आश्रित (निर्भर) क्यों होना पड़ रहा है। कई ऐसे भी लोग है जो कि रैन-बसेरा में रहते है, प्रत्येक दिन का 100-200 रूपया कमाते है। वे लोग इन्ही पैसे से खाना भी

खाते हैं और कुछ पैसा अपने घर के लिए भी भेज देते हैं लेकिन अन्य बेघर से ऐसा क्यों नहीं हो पाता है। हमेशा ये बेघर लोग कहते हैं कि हमारा कोई पहचान पत्र नहीं है, हमारा बैंक पासबुक नहीं है, हम पैसा कमाते हैं लेकिन जमा करने का कोई साधन नहीं है। इसलिए पैसा कमाते हैं और खर्च कर देते हैं। लेकिन जब हकीकत जानने की कोशिश की तो पता चला कि कई बेघर के मतदाता पहचान पत्र बने। इसमें से कुछ लोगों का पहचान पत्र चोरी हो गया तो कुछ लोग आना पहचान पत्र दुबारा लेने ही नहीं आए। कुछ बेघरों के बैंक खाता भी खुलवाया गया लेकिन अधिकतर लोगों ने अपने खाता में एक रूपया तक नहीं डाला। आखिर क्यों ऐसा हो रहा है इन बेघरों के साथ। सरकार और अन्य गैर सरकारी संगठन इन बेघरों के लिए करोड़ों रूपया खर्च कर रही हैं फिर लोग खुले आसमान के नीचे सोते हुए दिखाई देते हैं क्यों? अगर सरकार चाहती तो यह पैसा किसी अन्य विकास के कार्य में खर्च कर सकती थी लेकिन बेघर लोगों के पिछड़ेपन को देखते हुए सरकार हर वर्ष करोड़ों रूपया का घोषणा करती है कि बेघर ठंड से न मरे। एनजीओ भी इन बेघरों के लिए हर संभव प्रयास करती आ रही हैं लेकिन दिन-प्रतिदिन इन बेघरों की संख्या बढ़ती जा रही है। केस स्टडी का उद्देश्य यह भी है कि हमें इन बेघरों के लिए ऐसा उपाय करें जिससे की ये आत्मनिर्भर हो सकें। बेघर लोगों के जीवन में होने वाली अन्य गतिविधियों को भी जाने। बेघर लोगों के साथ सबसे बड़ी समस्याँ नशा सेवन का है। जब मैंने नशा सेवन के बारे में जानने की कोशिश की इसी क्रम में यमुना बाजार स्थित हनुमान मंदिर के पास प्लाईओवर के नीचे एक 16 साल का लड़का मिला जो कि दर्द से कराह रहा था, काफी रो रहा था। जब मैंने इसके दर्द



के बारे में जानने की कोशिश की तो पता चला इसके पास उस दिन पैसा न होने के कारण नशा नहीं ले पाया था जिसके कारण उसके कलेजा में दर्द काफी बढ़ गया था। अगर वह नशा किया होता तो उसे इस दर्द के बारे में पता नहीं चल पाता और 12 घंटा तक बेहोश रहता। इसकी सूचना ऐम्बूलेंस को देकर उसे अस्पताल भेजवाया। उसी प्लाईओवर के किनारे एक बुजुर्ग कंबल ओढ़े बैठे हुए थे। जब मैंने उन्हें उठाने की कोशिश की तो पता चला कि इनके गले में बड़ा सा घाव था। घाव इतना बड़ा हो चुका था कि मानो वह मौत से लड़ रहे हो लेकिन इनकी कोई सुनने को तैयार नहीं। ऐम्बूलेंस को सूचना देकर इन्हें भी अस्पताल भेजवाया। आज भी इन महानगरों में ऐसे भी लोग हैं जिन्हें इन रैन-बसेरा की वास्तव में जरूरी है। लेकिन ये बूढ़े-बूजुर्ग लाचार इंसान रैन बसेरा तक नहीं पहुंच पाते हैं और खुले आसमान के नीचे इन्हे दम तोड़ देना पड़ता है। आज हम युवाओं की कर्तव्य होना चाहिए कि इन बेघरों को रैन-बसेरा तक पहुंचाए। इनको मिलने वाली सुविधाओं के बारे में इन्हें बताए।

### **केस स्टडी करने का तरीका**

मैंने बेघर के उपर केस स्टडी करने से पहले बेघर के साथ रैन बसेरा में 5 दिन बिताया। उसके बाद केयर टेकर की सहायता से दो व्यक्ति के आचरण, रहन-सहन, अन्य तौर-तरीका के बारे जाना। इन दो बेघर के बारे स्थाई तौर पर पता चला कि वे दोनों प्रत्येक दिन एक ही शेल्टर में सोते हैं। छठा दिन इन बेघरों से बात चीत की। उसके बाद इनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में अपने केस स्टडी में लिखने के लिए

इजाजत मांगी। दोनों लोगों ने अपनी इच्छा से सब कुछ बताने को तैयार हो गये। केस स्टडी लिखने के क्रम में सबसे निम्न प्रश्न मैंने पुछा।

- बेघर का परिचय
- बेघर का पारिवारिक स्थिति
- बेघर के शिक्षा के बारे में
- कितने समय से बेघर है
- घर छोड़ने के पिछे क्या कारण है?
- बिना घर के रहने पर क्या कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है?
- जीविकोपार्जन के लिए क्या काम करते है?
- नशा के शिकारी कैसे हुए? नशा के रूप में क्या कुछ लेते है और क्यों?
- बेघर अपना घर जाना चाहते है या नहीं अगर नही तो क्यों?
- बेघर को अपने जीवन से भविष्य में क्या उममीद है?
- अगर इन्हें जीवन के मुख्यधारा से जोड़ा जाए तो क्या ये बेघर अपनी जिंदगी
- बेहतर कर सकते है।

## बेघर का सारांश



## बेघर का सारांश

व्यक्तिगत ब्योरा	
नाम	: गोपाल सिंह
पिता	: चरत सिंह
गांव	: शिवपुरा
थाना	: दादाबाड़ी
जिला	: कोटा
उम्र	: 50
राज्य	: राजस्थान

**पारिवारिक स्थिति :-** जब गोपाल 7 साल के थे तब इसके पिता की मृत्यु हो गयी थी। माता की मृत्यु सन् 2000 में हुई थी। गोपाल अविवाहित है। गोपाल के अलावा इनके परिवार में दो बहन हैं। दोनों विवाहित हैं। सन् 1989 से 2000 तक ड्राइविंग किया। 1996 में अपराधिक कारणों से 2 साल जेल की सजा काटी उसके बाद

1999 में दुबारा किसी अपराधिक कारण से 6 महीना का कारावास हुआ। 1999 में जेल से छुटने के बाद कुछ दिनों तक अपने घर पर रहे। कर्ज का बोझ अधिक हो जाने के कारण सन् 2000 में अपना घर बेचना पड़ा। घर बेचने के बाद कुछ दिन तक कोटा के शिवपुरा गांव में ही किराया के मकान पर अपने माँ के साथ रहा। सन् 2000 में ही माँ की मृत्यु हो जाने के बाद घर छोड़ दिया। तब से अब तक वे बेघर है।

**घर छोड़ने का कारण :** आर्थिक तंगी तथा अधिक कर्ज होने के कारण घर बेचना पड़ा। घर बेचने के बाद जीविकोपार्जन के लिए कुछ नहीं बचा। पिछले 15 साल से बेघर हैं। इन 15 साल में अधिकतर समय रेल-यात्रा में बिताया। पिछले पन्द्रह साल से भीख मांगने का काम करते हैं। सन् 2000 से अभी तक इन्होंने चेन्नई, केरल, मुम्बई, कलकत्ता, पटना इत्यादि जगहों पर समय बिताया है। पिछले एक साल से दिल्ली में रह रहे हैं। अंतिम बार मुम्बई से ट्रेन पकड़कर पुरानी दिल्ली पहुंचे। पुरानी दिल्ली पर पहुंचने के बाद भटकते रहे। कई दिन-भूखे प्यासे गुजारा। सोने के लिए पटरियों का सहारा लिया। एनजीओ के द्वारा इन्हे रैन-बसेरा तक लाया गया। पिछले 15 साल में अधिकतर दिन खुले आसमान के नीचे ही गुजारा। जब खाने के लिए कुछ नहीं मिलता है तो फेका हुआ खाना उठाकर खा लेते हैं। इन्हें आँख से कम दिखाई देता है तथा शारिरीक रूप से कमजोर भी है। कभी-कभी बर्तन-साफ करने का काम कर लेते हैं नहीं तो अधिकतर समय यमुना बाजार स्थित हनुमान मंदिर पर भीख मांगते हैं।

**गोपाल का दिनचर्या :** सुबह से 6-7 बजे के बीच में उठना। बिना ब्रश किए हुए चाय और रस लेना। खाना खाने के लिए यमुना पुस्ता या फिर कश्मीरी गेट स्थित मंदिर के पास कतार (लाइन) में लगकर खाना लेना। खाना खाने के बाद यमुना बाजार पर भीख मांगना। गोपाल कहते हैं कि जब कई दिनों तक खाना नहीं मिल पाता है तो चांदनी चौक स्थित शिशगंज गुरुद्वारा में खाना खाने चले जाते हैं। सप्ताह में दो से तीन बार नशा भी करते हैं। पैसा रहने पर दारू या एविल तथा नॉरफिन का इंजेक्शन लगाते हैं। गोपाल कहते हैं कि इंजेक्शन यमुना बाजार स्थित फ्लाई ओवर के नीचे 30 रूपया में 2.5 एम.एल तथा 60 रूपया में 5 एम.एल. दवा मिल जाती है जिसे इंजेक्शन के जरिए नशा में लगाते हैं। एक बार इंजेक्शन लेने पर 12 घंटा तक नशा रहता है। नशा उतरते ही कलेजा में जलन, उल्टी, दस्त, सिर में चककर लगने लगता है। गोपाल कभी-कभी 24 घंटा भूखा रह जाते हैं। जब इन्हे खाना नहीं मिलता है तो फेका हुआ खाना को भी खा लेते हैं। गोपाल की खासीयत यह है कि वह घुम-घुम कर अपना जीवन व्यतित करना चाहते हैं लेकिन दिल्ली आने के बाद इन्हें अन्य शहरों से कुछ ज्यादा राहत मिला है। यहां पर इन्हें खाने के लिए खाना आसानी से मिल जाता है। रहने के लिए शैल्टर की भी व्यवस्था है। भीख मांग कर अन्य जरूरतों के लिए पैसा भी जमा कर लेते हैं। कभी-कभी पैसा नहीं रहने पर किसी से मांग कर गांजा, बीड़ी भी पी लेते हैं। गर्मीयों में शैल्टर के बाहर रहना पसंद करते हैं क्योंकि शैल्टर में मच्छर का डर अधिक रहता है। बारीश के दिनों में कभी-कभी रैन-बसेरा में आ जाते हैं। लेकिन शर्दियों में नियमित रूप से शैल्टर में रहते हैं।

**भविष्य में अपने जीवन से उम्मीद ( चाह ) :**

गोपाल शारिरिक रूप से कमजोर भी है और आंखों से कम दिखाई देती है। गोपाल का कहना है कि यदि इन्हें हल्का काम मिल जाता है तो भीख मांगना छोड़ सकते हैं। रहने के लिए इन्हें रैन-बसेरा ही पसंद आता है क्योंकि यहाँ पर रहने के साथ-साथ कंबल, बिजली, पानी, दवा इत्यादि की सुविधा मिल जाती है। पिछले 15 साल में गोपाल कई राज्य का भ्रमण भी किया है लेकिन अब शारिरिक रूप से कमजोर भी हो गये हैं। अब दिल्ली में ही अपनी अंतिम समय तक बिताना चाहते हैं। घर पर जाने के बारे में पूछा तो इन्होंने बताया कि इनके पास इनके गांव में कुछ भी नहीं है। एक अपना मकान था जिसे सन् 2000 में बेच दिया। भविष्य को और बेहतर बनाने के लिए काम करके खाना चाहते हैं। भीख मांगना इन्हें अच्छा नहीं लगता लेकिन मजबूरन पैसा के लिए भीख मांगना पड़ता है। ड्रग्स का इस्तेमाल कर लेते हैं। भविष्य में इनका कोई सहारा नहीं है इसलिए रैन-बसेरा के शरण में रहना है।

#### व्यक्तिगत ब्योरा



नाम : राज कुमार  
पिता : चूड़ामणी ढाकाल  
माता : उमा देवी  
गांव : मिल्स  
थाना : विराटनगर  
जिला : कोशी  
उम्र : 32  
राज्य/देश : नेपाल  
पारिवारिक स्थिति : पिता - चूड़ामणी ढाकाल नेपाल बैंक के कर्मचारी है।  
माता : उमा देवी गृहणी है। इसके अलावा इनके परिवार  
शैक्षणिक योग्यता : 10वीं कक्षा पास, मील्स माध्यमिक विद्यालय, मील्स से।  
भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी, नेपाली, भोजपुरी

घर छोड़ने का कारण : घर छोड़े हुए लगभग 10 वर्ष हुए है। जिस समय इन्होंने घर छोड़ा था उस समय इनका उम्र 20-21 वर्ष था। उस समय 11वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। पढ़ाई के दौरान ही कुछ गलत संगति में उलझ गये। इसका एक था जो कि रिक्शा चलाने का काम करता था। नशा की भी अच्छी शौक थी। लगभग एक साल तक दोनों में अच्छी दोस्ती चलती रही। इसका दोस्त जो रिक्शा चलाया करता

था वह रिक्शा किसी दूसरे व्यक्ति का था। यह रिक्शा उस व्यक्ति से वह भाड़ा पर लेकर चलाया करता था। नशे का लत लग जाने के कारण राजकुमार का दोस्त रिक्शा बेचकर भाग गया। रिक्शा के मालिक ने रिक्शा चोरी का इल्जाम राजकुमार पर लगाया क्योंकि राजकुमार उस रिक्शा चालक के साथ हमेशा रहता था। एक रात राजकुमार को पुलिस पकड़ने आई लेकिन इसके घर वालों ने इसे छिपा दिया जब पुलिस इसके घर से चली गई तो इसके घर वालों ने घर से बाहर किसी संबंधी के यहां जाने को कहा। राजकुमार इस बात से काफी डरा हुआ था। वह अपने घर से निकला जरूर अपने संबंधी के यहां जाने के लिए लेकिन वह अपने संबंधी के यहां न जाकर कटिहार चला आया। वहां से पुरानी दिल्ली के लिए गाड़ी पकड़ी। वह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन सन् 2005 में पहुंचे। समय दिपावली के आस-पास का था। वह भटकता हुआ लालकिला के पास पहुंचे। लालकिला पर उसने 10 दिनों तक काम किया। काम करने के बदले में इसे खाना मिलता था। लालकिला पर राजकुमार को एक व्यक्ति ने बुराड़ी में काम दिलवाया। बुराड़ी में राजकुमार सुबह में भैंस के खटाल में काम करते थे और दोपहर में आइस्क्रीम फैक्ट्री में काम करते थे। 2005 में राजकुमार को दोनों काम से महिना का 1500 रूपया मिलता था। डेढ़ साल बाद राजकुमार अपना घर नेपाल गये। घर पर एक दिन ठहरने के बाद फिर वह पुलिस के डर से दिल्ली भाग आये। राजकुमार दुबारा 2007 में दिल्ली आये। कुछ दिनों तक भटकता रहे उसके बाद एक होटल में काम किया। कुछ दिनों तक होटल में काम करने के बाद राजकुमार को किसी ने एनजीओं के बारे में जानकारी दी। एनजीओ में राजकुमार को काम भी मिला। शरण नामक एन.जी.ओ. में ही काम करने के दौरान



राजकुमार की भेंट कुछ नशा सेवन करने वाले लोगों से हुआ। वहाँ पर राजकुमार भी धीरे-धीरे नशा का शिकारी होने लगे। NGO से काम छुट जाने के बाद राजकुमार बेरोजगार हो गया। पिछले डेढ़ साल से राजकुमार बेरोजगार है। दिन में अगर कही काम मिला तो कर लिये नहीं तो पुरा दिन बिना काम के गुजारना पड़ता है। खाना कहीं भी दान में मिल जाता है। रहने के लिए शेल्टर है। इसी तरह से जिंदगी कट रही है।

### राजकुमार का दिनचर्या

सुबह 6-7 बजे के बीच में उठना। बिना ब्रश किए हुए चाय और रस लेना इसके बाद किसी मंदिर पर खाना के लिए लाइन में लगकर खाना खाने चले जाते हैं। खाना खाने के बाद कही भी खुले आसमान के नीचे सो जाते हैं। दोपहर में अगर कुछ खाने को मिला तो ठिक है नहीं तो शाम में फिर दान के भोजन का इंतजार करना, जब भोजन मिल जाए तो खाकर पुनः नाइट शेल्टर में सोने के लिए चले जाते हैं। सप्ताह में एक बार स्नान भी कर लेता है। कभी-कभी अगर पैसा हुआ तो गांजा, बीड़ी, दारु भी ले लेते हैं। कहीं काम मिला तो करने चले गये नहीं तो दिन भर बिना काम के गुजारा करना पड़ता है। पैसा के अभाव में ही अधिकतर दिन बिताना पड़ता है। कई बार तो भूखे भी सोना पड़ता है। गर्मीयों में शेल्टर में मच्छर अधिक लगने के कारण बाहर ही खुले आसमान के नीचे सोना पसंद करते हैं। ढंड में सर्दी और हवा से बचने के लिए शेल्टर में आ जाते हैं। मनोरंजन का भी बहुत अच्छा साधन है। राजकुमार को जब कभी सिनेमा देखने का मन करता है तो वह यमुना पुस्ता के नीचे एक तंबू बना हुआ है वहाँ पर 5 रूपया में एक सिनेमा देख लेते हैं।

इस तंबू की खासीयत है कि यहां पर 24 घंटा सिनेमा चलता है। एक सिनेमा का 5 रूपया लेता है। राजकुमार कहता है कि कुछ दिन पहले नशा का लत लग गया था। उस समय 30-40 रूपया की दारू पि लेते थे। राजकुमार कभी-कभी नशा की सुई भी लगाया करता था। वह कहते है कि 30 रूपये में 2.5ML, 60 रूपये में 5 ML ड्रग्स को सुई के द्वारा नशा में लगाते थे जिससे 12 घंटा तक नशा रहता था। कुछ दिन पहले राजकुमार नशामुक्ति केन्द्र में जाकर इस नशा से छुटकारा पाया है। अब वह कभी-कभी नशा कर लेता है। खाने के लिए इन्हें कम-कम 50 रूपया चाहिए जिससे वह 2 टाइम खाना खा सके। अगर नशा करते है तो कम से कम 100 रूपया चाहिए।

#### **भविष्य में अपने जीवन से उम्मीद ( चाह )**

श्राजकुमार का कहना है कि वह चाहते है कि मुझे कुछ काम मिल जाता है तो मैं रैन-बसेरा छोड़ कर अपना कमरा लेकर अच्छी जिंदगी व्यतित करना चाहता है। काम न होने के कारण पैसा नहीं हो पाता है जिसके कारण मजबूरन रैन-बसेरा में रहना पड़ता है। राजकुमार अपने घर वाले के (परिवार) के साथरहना चाहता है लेकिन पिछले 8 साल में इतना भी पैसा नहीं हो पाया जिससे कि वह अपना घर जा सके। राजकुमार कहता है कि मैं एक आत्मनिर्भर इंसान बनना चाहता हूं। घर का टेंशन, काम का टेंशन, होने के कारण मजबूरन नशा लेना पड़ता है। राजकुमार के पास अभी केवल एक पैंट, एक शर्ट और एक चादर है। इसके अलावा राजकुमार के पास कुछ कपड़ा पहचान पत्र और एक बैग था जो कि चोरी हो गया है। राजकुमार की खासीयत यह है कि वह हिन्दी के अलावा बहुत अच्छा इंगलीश भी बोल लेता है।

इसका पहला इच्छा है कि कुछ पैसा जमा कर घर जाना चाहते है। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि इनके पास बैंक खाता, पहचान पत्र भी नहीं है। कई बार घर जाने के लिए कुछ पैसा जमा किया लेकिन पैसा चोरी हो जाने के कारण घर नहीं जा सका। राजकुमार ज्यादातर शादी पार्टीयों में काम करता है वहां पर इन्हें रोज का 500 रूपया मिल जाता है लेकिन ऐसा काम हमेशा नहीं मिल पाता है जिससे हमेशा पैसा की कमी हो जाती है। राजकुमार कई बार काम की तलाश में गया लेकिन पहचान पत्र न होने के कारण काम नहीं मिल पाता है। सफाई के बारे में पुछे जाने पर इन्होंने कहा कि नहाने के लिए गर्म पानी नहीं होता है। अगर गर्म पानी मिल जाए तो हम सप्ताह में 3-4 दिन स्नान कर सकते है। नहाने के लिए साबुन, मुंह धोने के लिए ब्रश तथा पेस्ट की भी सुविधा होनी चाहिए जिससे कि हम प्रत्येक दिन साफ-सफाई कर सके। राजकुमार कहते है कि जब वह किसी से कुछ मांग कर खाते है तो इन्हें शर्मिंदगी महसूस होता है लेकिन मजबूरन इन्हें मांग कर खाना पड़ता है। अगर इन्हें अच्छा काम मिल जाता है तो अच्छी जिंदगी जिना चाहता है। अपने घर-परिवार के साथ मिल कर बचा हुआ समय गुजारना पड़ता है।

**रैन बसेरा की पहुंच को बढ़ावा देने लिए सुझाव :**

रैन बसेरा की पहुंच को आम लोगों तक ले जाने के लिए अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना होगा। रैन-बसेरा अधिकतर वैसे स्थान पर बनाया जाए जहाँ पर घनी आबादी हो जैसे रेलवे स्टेशन के पास, बस अड्डा के पास बड़े-बड़े अस्पताल के पास इन जगह पर रोजाना हजारों की तदात में लाग अपनी रोजी-रोटी, इलाज, के लिए आते है। लेकिन रहने के लिए उचित व्यवस्था न होने के कारण खुले आसमान के नीचे सोना पड़ता है। बैनर, पोस्टर, विज्ञापन के माध्यम से रैन-बसेरा की जानकारी

बेघर लोगों तक पहुंचाना होगा। अगर संभव हो तो टॉल फ्री नंबर तथा कॉलसेंटर की व्यवस्था करना होगा जिससे बेघर लोग रैन बसेरा के बारे में जानकारी ले सकें। या फिर बेघर को सहायता करने वाले लोग भी टॉल फ्री नंबर के माध्यम से इसकी सूचा दे सकते हैं। रैन-बसेरा की पहुंच को बढ़ावा देने के लिए रैन बसेरा को साफ-रखना होगा। बहुत से ऐसे भी बेघर हैं जिन्हें रैन बसेरा की जरूरत है लेकिन रैन-बसेरा में गंदगी होने के कारण जाना नहीं चाहते हैं। बहुत सारे लोगों को रैन-बसेरा के बारे में पता भी नहीं होता है। सरकार या एनजीओ जो इन बेघर के लिए काम करती है उन्हें चाहिए कि रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, अस्पताल के पास सेंटर बनाए जिससे बेघर लोगों को रैन-बसेरा तक पहुंचाया जाए।

**बिना घर के रहने पर होने वाली परेशानियां/चुनौतियां सुरक्षा की चुनौती :**

बेघर लोगों के सबसे बड़ी चुनौतियां सुरक्षा को लेकर रहता है। अगर कोई महिला अकेले में कहीं मिलती है उसके साथ कुछ गलत होने की आशंका बनी रहती है। अगर वह रैन-बसेरा में पहुंच जाए तो वहां पर अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकती है लेकिन सड़क, पटरियों, खुले-आसमान के नीचे नहीं।

**बच्चों के साथ होने वाली परेशानियां :**

अगर कोई बच्चा भटकता हुआ किसी बाल तशकर को मिल जाए तो उसे वह बेच भी सकता है, उससे गैर कानूनी काम भी करवा सकता है, बालश्रम का भी शिकार हो सकता है लेकिन अगर उसे रैन-बसेरा तक पहुंचा दिया जाए तो वह सुरक्षित रह सकता है।

**सामान चोरी होने का डर :**

बेघर लोगों के साथ चोरी की भी घटनाएं होती रहती हैं। अगर कोई बेघर किसी अपराधी को अकेला में मिल जाए तो वह आपराधी उस बेघर के साथ लूट-पाट यहां तक की जान से मारने की भी धमकी दे देता है।

### साफ-सफाई की समस्याएं :

बेघर के साथ बिना घर के रहने पर साफ-सफाई जैसे शौचालय, नहाना, खाना-पिना भी मुश्किल हो जाता है। लेकिन रैन-बसेरा में वे तमाम सुविधाएं रैन बसेरा में उपलब्ध रहता है। शर्द से बचने के लिए कंबल, गर्मी से बचने के लिए पंखा, बिमारी के लिए दवा की भी व्यवस्था होती है। प्राथमिक उपचार सभी रैन-बसेरा में उपलब्ध कराया गया है। इन बेघर लोगों के साथ बिना घर के रहने पर सुरक्षा, सामान चोरी होने का डर, साफ सफाई की समस्याएं बच्चों के साथ अनहोनी का डर बना रहता है।

### बेघरों की प्रमुख समस्याएं:

**सफाई की समस्याएं:** अधिकतर बेघर ऐसे हैं जो कि सफाई में नहीं रहते हैं। कहा जाता है तन साफ तभी मन साफ अधिकांश बेघर एक ही कपड़ा को महीनों तक पहनते हैं। बाल, दाढ़ी, बड़े-बड़े होते हैं जिसके कारण इसमें जूँ का घर बन जाता है जिससे हमेशा इसका शरीर खुजलाता रहता है खुजली के लिए एवील नाम की दवा मिलती है जिसे इन्हें लगाने के लिए दिया जाता है लेकिन यह दवाएं लोग नशा के रूप में सुई द्वारा नशा में लगाते हैं। दाँत की भी सफाई नहीं करते हैं जिससे पायरीया होने का खतरा बना रहता है। रहने को तो बहुत अच्छा सा शेल्टर मिल जाता है लेकिन नहाने के लिए गर्म पानी नहीं होता है। साबुन भी नहीं होता है जिससे की सफाई कर सके। इसके अलावा दाँत की सफाई के लिए ब्रश तथा पेस्ट भी होता है। अगर वे बेघर लोग स्वच्छता पर ध्यान दें तो इनका तन साफ रहेगा ज बतन साफ रहेगा तो मन साफ रहेगा। लोग इन्हें काम पर भी रखना चाहेंगे। अगर वे साफ-सुथरे में रहते हैं तो काम आसानी से मिल सकता है।

**नशा की समस्याएँ :** यमुना पुस्तक के केयर टेकर कमल का कहना है कि 90 प्रतिशत बेघर नशा के शिकार होते हैं। नशा के रूप में वे गांजा, सुलेशन, स्नैकस, नेल

रिमूवर, नॉरफिन और एविल का इंजेक्शन लेते हैं। दांडी पार्क स्थित नाइट शैल्टर में रहने वाला बेघर मुकेश का कहना है कि नशा की लत लग जाने से अगर एक दिन नशा नहीं मिलने पर कुछ भी करने का मन नहीं करता है। नशा के कारण इसके कई साथियों की मौत भी हो चुकी है। मुकेश का कहना है कि मैं नशा छोड़ना चाहता हूँ लेकिन छोड़ नहीं पाता क्योंकि मुकेश को नशा का लत लग चुका है और नशा का सामग्री इसे आसानी से मिल जाता है। मुकेश का कहना है कि 2.5 ML नॉरफिन और एविल के इंजेक्शन को लगाने के लिए 30 रूपया देना पड़ता है। 60 रूपये में 5 ML मिलता है। नॉरफिन, एविल तथा एक सिरिंज की किमत मात्र 20 रूपया है जबकि इन बेघर लोगों से 120 रूपया लिया जाता है। 120 रूपया की इस दवा को चार-पांच लोग मिलकर नशा के रूप में नश में लगाते हैं। इसका प्रभाव एक सामान्य इंसान पर 12 घंटा तक रहता है। नशा का प्रभाव समाप्त होने पर कलेजा में जलन, दस्त, सिर में चक्कर जैसे परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे कुछ बेघर इन ड्रग्स के शिकारी बन चुके हैं जब तक इनकी जान नहीं चली जाती वो इसे छोड़ नहीं सकते हैं। मुझे इस नशीले पदार्थ के बारे में जानने के लिए यमुना बाजार स्थित हनुमान मंदिर के पास फ्लाईओवर के नीचे देखने को मिला। ड्रग्स को लेने में एक 12 साल के बच्चे से लेकर 70 साल का बुजुर्ग भी शामिल था।

**पहचान पत्र की समस्या :** पहचान पत्र बड़े ही जोर शोर से बनाया जाता है लेकिन पाया गया कि अगर 100 लोग पहचान पत्र के लिए आवेदन दिया तो उसमें से 20-25 लोग ही पहचान पत्र लने आए। इन 20-25 लोगों में से केवल 5-7 लोग के पास ही पहचान पत्र मिला बाकी लोगों का चोरी हो गया है। जिस उद्देश्य से इन बेघर का कार्ड बनाया जाता है वह उद्देश्य कभी पुरा नहीं होगा। कई लोगों के पास मतदाता पहचान पत्र होने के बावजूद भी मतदान नहीं करते हैं। ऐसे में इस कार्ड का कोई महत्व नहीं रह पाएगा इन बेघरों के लिए।

**सरकार तथा एनजीओ को बेघर के लिए पहचान पत्र निर्गत करने का सुझाव :**

सरकार तथा एनजीओ को मिलकर इन बेघर के लिए पहचान पत्र के तरह ही होमलेस कार्ड बनाना चाहिए। जिससे कि इसकी पहचान होमलेस के रूप में हो। यदि वह बेघर किसी शेल्टर में स्थाई तौर पर 6. महिना से अधिक रहता है तो उसे मतदाता पहचान पत्र निर्गत की जाए। आधार कार्ड के लिए सरकार कोशिश करें कि कम-कम महिना में एक बार कैंप लगाए जिससे कि अधिकतर बेघरों का पहचान संबंधि ब्योरा सरकार के पास पहुंच सके। यदि इन बेघर लोगों को होमलेस कार्ड बन जाता है तो इनका पहचान संबंधि काम पुरा हो सकता है।

**चिकित्सा की सुविधा के लिए सुझाव :** प्रत्येक कलस्टर में एक एक स्वस्थय केन्द्र की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि शेल्टर के मरीजों को अस्पताल ले जाने के लिए नियमित मात्रा में स्वस्थय सहयोगी की व्यवस्था हो। कई बार देखा गया है कि केयर टेकर एम्बुलेंस को फोन करते हैं लेकिन एम्बुलेंस वाले कहते हैं कि रोगी के साथ उसके देख-रेख के लिए एक व्यक्ति की जरूरत है ऐसी स्थिति में रोगी के देख रेख के लिए एनजीओएस या फिर एम्बुलेंस के पास स्वास्थय सहयोगी होना चाहिए। जो समय पर रोगी के साथ हास्पिटल जा सके। और उसकी सेवा करे सकें।

**काम की व्यवस्था के लिए सुझाव :** अधिकतर बेघर का कहना है कि हमारे पास कोई काम नहीं होता है जिसके कारण हम बेरोजगार हैं। बेघर के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था हो जिससे कि वे अपने जीविकोपार्जन के लिए काम सिख कर पैसा अर्जन कर सकें। इसके अलावा शेल्टर के पास में वर्क शॉप की व्यवस्था हो जहां पर बेघर काम कर सकें। जैसे ही वे बेघर काम करने लगेंगे तो आत्मनिर्भर हो सकते हैं। बहुत से ऐसे भी बेघर हैं जो कि बूढ़े हैं या फिर शारिरीक रूप से अपंग हैं उनके लिए भी हल्के काम की व्यवस्था करना चाहिए।

**सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुझाव :** शेल्टर पर पुलिस बल की तैनाती की जाए जिससे कि वे बेघर अनुशासीत रहे। कई बार नशे के हालत में वे बेघर अनुशाशित

रहे। कई बार नशे के हालत में वे बेघर उग्र हो जाते हैं लेकिन पुलिस को देखते ही शांत हो जाते हैं। महिला शेल्टर पर सुरक्षा के लिए महिला पुलिस की व्यवस्था की जाए। जब कभी 100 नंबर पर डायल कर एनजीओएस के द्वारा बेघर महिला की सूचना दी जाती है तो उस समय महिला पुलिस नहीं आ पाती है जिससे बेघर महिला को अपनी परेशानियों को बताने में कठिनाईयां का सामना करना पड़ता है। पुलिस को जहां कहीं भी बेघर ड्रग्स लेते हुए दिखे उसे उस पर कारवाई करना चाहिए।

**बेघर की संख्या कम करने का सुझाव :** अगर सरकार और एनजीओ वास्तव में बेघर की संख्या कम करना चाहती है तो सबसे पहले बेघर के लिए टॉल-फ्री नंबर तथा कॉल सेंटर बनाया जाए और इसका प्रसारण मीडिया के सभी माध्यमों पर किया जाए। प्रसार प्रचार के माध्यम से बेघर को मिलने वाली सुविधा को भी बताया जाए। कई बार हम अपनी आंखों से बेघर बेसहारा, लोगों को देख कर भी छोड़ देते हैं क्योंकि हमारे पास उतना समय नहीं होता जिससे की इनकी सेवा करे। टॉल फ्री नंबर के माध्यम से हम इसकी सूचना शेल्टर को दे सकते हैं। टॉल फ्री नंबर से बेघर का डाटा, शेल्टरों की जानकारी, स्वास्थ्य संबंधि जानकारी आसानी से दी जा सकती है। जैसे ही टॉल फ्री नंबर बन जाएगा तो कोई भी व्यक्ति बेघर की सूचना देने में संकोच नहीं करेगा। क्योंकि यह निशुल्क नंबर है। यह सुविधा 24 घंटा के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

**बेघरों के लिए काउंसलिंग की व्यवस्था :** छात्रों या फिर अन्य समाज सेवीयों के द्वारा बेघर लोगों के लिए सप्ताह में 2-3 दिन 1 घंटा का काउंसलिंग की जाए। शलाइड शो, पीपीटी, डोक्यूमेंटी के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ नशीले पदार्थ के सेवन से होने वाली नुकसान के बारे में बताएं। बेघर अपनी जिंदगी को और बेहतर कैसे बनाएं साफ-सफाई के प्रति जागरूकता को लेकर सभी सूचनाओं का



प्रोजेक्टर या टेलीविजन के माध्यम से दिखाना चाहिए। जैसे ही वे लोग अपने कर्तव्य को जानेगें तो अधिकार भी इन्हें मिल जाएगा।

**छात्रों की भूमिका :** छात्र अपना प्रोजेक्ट कोशिश करें कि इन बेघरों के उपर बनाए। स्कूलों, कालेजों के छात्र को इन बेघर के उपर रिसर्च या फिर परियोजना बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जिससे यह युवा पीढ़ी जान-सके वे लोग बेघर क्यों है और हमें इन बेघर के लिए क्या करना चाहिए जिससे वे अपने जीविकोपार्जन के लिए दूसरे पर निर्भर न हो कर आत्मनिर्भर हो सके। हमारे आस-पास बहुत से शादी पार्टियों में भोजन बच जाता है जो कि बर्बाद हो जाता है उसे हम सुरक्षित कर इन बेघर भूखे लोगों का पेट भर सकते हैं। इन बेघरों के लिए केवल सरकार या एनजीओ ही नहीं बल्कि एक आम आदमी भी सेवा कर सकता है। अधिकतर बेघर का संबंध कही न कही अपराध से रहा है। जिसके लिए उसे अपना घर, गांव, समाज छोड़ना पड़ा है। ऐसे लोगों से हमें इनकी समस्यां को जानकर उचित समाधान निकालना चाहिए। हो सकता है जिस अपराध के लिए वे बेघर अपना घर छोड़ा है वहीं अपराध यहां भी शुरू कर दे तो हमारे समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा हो सकता है।

**केयर टेकर के लिए सुझाव :** केयर टेकर इन बेघर लोगों के जीवन से अच्छी तरह से परिचित होते हैं। केयर टेकर इनके जीवन के प्रत्येक गतिविधियों से अवगत होते हैं। सरकार तथा एनजीओ को संयुक्त रूप से केयरटेकर या एनजीओ के कार्यकर्ता को समय-समय पर विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। इस विशेष प्रशिक्षण के संबंध में केयर टेकर (कार्यकर्ता) से भी राय या विचार लिया जाए इसके साथ ही मनोवैज्ञानिक और चिकित्सकों के विचार विमर्श पर प्रशिक्षण का कार्यक्रम तैयार कर एनजीओं के सभी कार्यकर्ता को प्रशिक्षित किया जाये जिससे कि वे केयर टेकर बेघर की समस्या को समझकर उसका निदान निकाल सके। केयर टेकर हमेशा जिम्मेदारी पूर्वक काम करे। मेरा एक अनुरोध एनजीओ से भी है कि एनजीओ केयर टेकर को

- महिला शेल्टर पर किसी प्रकार के मामले दर्ज करने के लिए महिला पुलिस की कमी।
- नहाने के लिए गर्म पानी की कमी।
- पीने के लिए साफ पानी की कमी।
- शौचालय की कमी।
- सफाई कर्मचारी की कमी।
- रोजगार एवं कौशल विकास की कमी।
- प्राथमिक चिकित्सा बचाव दल की कमी।
- नहाने के लिए साबुन की कमी।
- मुँह धोने के लिए ब्रश, पेस्ट की कमी।
- मनोरंजन की व्यवस्था की कमी।
- पहचान पत्र की कमी।
- बैंक खाता की कमी।
- केयर टेकर के लिए प्रशिक्षण की कमी
- बेघरो को पढने के लिए पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओ की कमी।
- केयर टेकर को बैठने के लिए कुर्सी की कमी
- बेघर का सामान रखने के लिए लौकर की कमी
- रैन-बसेरा मे हिटर की कमी।
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ता, केयर टेकर को प्रोत्साहन के लिए इनाम की कमी।
- बेघर के लिए राशन कार्ड की कमी

**निष्कर्ष-** बेघर लोग भी हमारे समाज के अंग हैं ऐ सभी लोगों के जीवन मे कही न कही एक दर्द छिपा है जिसके कारण ऐ बेघर ही रहना चाहते हैं। हमें जरुरी है उस

सके। इन बेघरों को आवास, आंशिक रूप से भोजन, वस्त्र, दवा मिल जाता है लेकिन शिक्षा नहीं मिल पाता है। शिक्षा की कमी के कारण ही आज अधिकांश लोग बेघर हैं। हमें तथा एनजीओ को चाहिए कि इनके लिए नैतिक, बौद्धिक, मौलिक शिक्षा उपलब्ध कराई जाए जिसका अनुसरण कर ए बेघर अपने जीवन में कुछ बेहतर कर सकें।

**दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड को सुझाव-** अगर आश्रय सुधार बोर्ड इन बेघरों की संख्या कम करना चाहती है तो इस दिशा में इस बोर्ड को निम्न कदम उठाना चाहिए।

- बेघरों के लिए काम करने वाली तमाम एजेंसियों के लिए एकल टॉल फ्री नंबर की व्यवस्था करनी चाहिए। इसके साथ ही कॉल सेंटर की भी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि बेघरों के बारे में किसी भी प्रकार की सूचना लेने एक फ़िर देने में परेशानी न हो।
- बेघरों के लिए बेघर कार्ड निर्गत किया जाए जिसकी वैधता पूरी दिल्ली हो।
- प्रत्येक कलस्ट में निगरानी के लिए कंप्यूटर की व्यवस्था हो जहाँ पर बेघरों की सूचना को तथा इन पर खर्च होने वाली पैसा का निगरानी आसानी से हो सके। प्रत्येक शेल्टर में टेलीफोन की भी व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे निगरानी के अधिकारी 24 घंटा का सूचना, शेल्टर पर आए बिना ही ले सकें।
- असहाय, बुजुर्गों के लिए कम-कम शाम में एक टाइम की भोजन व्यवस्था करना चाहिए।
- निगरानी तथा देख-रेख के लिए सीसीटीवी कैमरा की व्यवस्था होनी चाहिए।

**रैन-बसेरा में पाई गई कमीयाँ-**

- टॉल फ्री नंबर तथा कॉल सेंटर की कमी।

समय पर वेतन भुगतान करें। कई केयर टेकर का कहना है कि हमें समय पर वेतन नहीं मिलता तो हम जिम्मेवारी पूर्वक काम कैसे करें? कई बार केयर टेकर ड्यूटी के समय सोते हुए दिखाई देते हैं तो कोई केयर टेकर शेल्टर के बाहर अलाव (आग सेकते हुए दिखाई देते हैं)। कई बार शेल्टर के अन्दर/बाहर धूमपान भी करते हैं। केयर टेकर से नम्र अनुरोध है कि वे ऐसी कोई भी गतिविधियां न करे जिसका नाकारात्मक प्रभाव बेघर के उपर पड़े। ऐसे केयर टेकर को उनके कर्तव्य को जिम्मेदारी पूर्ण निभाने के लिए उचित कारवाई करना चाहिए। केयर टेकर के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता भी निर्धारित करना चाहिए। एनजीओं के कुछ ऐसे भी कार्यकर्ता हैं जो अपने तन-मन से बेघर की सेवा में लगे रहते हैं। कुछ कार्यकर्ता ऐसे भी हैं जो अपनी हाथों से बेघर बेसहारा लोगों का शौच तक साफ किया। इनके मन में हमेशा सेवा का भाव रहता है ऐसे कार्यकर्ता को हमेशा हौसला बुलंद करना चाहिए। इन कड़ाके की ठंड में भी अपनी जान की परवाह किए बिना बेघर की सेवा में लगे रहते हैं। एनजीओ को चाहिए कि ऐसे कार्यकर्ता को उसके उत्कृष्ट कार्य के लिए पुस्कार की व्यवस्था करे जिससे कि अन्य केयर टेकर, एनजीओ कार्यकर्ता इनसे प्रेरित होकर और बेहतर कार्य करने को अग्रसर होंगे।

**सफाई की व्यवस्था को लेकर सुझाव-** शेल्टर में बेघरो के साफ-सफाई के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक शेल्टर के साफ-सफाई के लिए सफाई कर्मचारी की व्यवस्था होनी चाहिए। बेघर के लिए ठंड में गर्म-पानी की व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अलावा इनके साफ-सफाई के लिए साबुन, ब्रुश, पेस्ट, तेल, कंघी की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि बेघर अपने स्वस्थ, अपने तन की साफ-सफाई कर सकें। बेघर के बाल तथा दाढ़ी बनाने के लिए नाई (हज्जाम) की व्यवस्था होनी चाहिए। एक निश्चित समय तक इन बेघरो को शेल्टर में रहने दिया जाए जब ऐ किसी काम करने लायक या आत्मनिर्भर हो जाए तो इन्हे रैन-बसेरा से जाने के लिए नम्रपूर्वक प्रेरित करना चाहिए। नशा मुक्ति अभियान को बड़े स्तर पर चलाना होगा जिससे कि बेघर लोग नशा को छोड़कर अपने जीवन की मुख्यधारा की ओर लौट

दर्द को जानकर उसका समाधान निकालना। अगर इन बेघरो को पट्टीयो पर सोने से नही रोका गया तो आने वाले भविष्य में दिल्ली जैसे महानगर के लिए बहुत बड़ी चुनौती हो सकती है। शहर ही पट्टीयाँ, खाली जगहो पर अवैध रूप से कब्जा हो सकता है जिसके कारण गंदगी, असुरक्षा, अतिक्रमण, जाम जैसी समस्याँ उत्पन्न हो सकती है। हमे कोशिश करना चाहिए कि ऐ बेघर को पट्टीयो पर से समझा कर शेल्टर तक लाए और इस रैन-बसेरा मे ऐसा माहौल बनाए जिससे की ऐ जीवन की मुख्यधारा की पथ पर चल सकें। दूसरे बेघर के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सके। हमलोगों की भी समाजिक जिम्मेदारी बनती है कि इन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़कर इन्हे बेहतर जींदगी जीने का अवसर प्रदान करे। इन्हे कभी एहसास न होने दे कि ये बेघर है। विज्ञापनप, मीडिया के माध्यम से रैन-बसेरा के बारे मे अधिक-अधिक जागरुकता फैलाए। शहर में आने-वाले नये बेघर को भी शेल्टर की छाया मिल सके। सर्दी के मौसम मे हम कोशिश करे कि इन्हे खुले आसमान के नीचे न सोने दे। इन्हे रैन-बसेरा के बारे मे बताए। एनजीओ के कार्यकर्ता को चाहिए कि वे रात के समय खासकर सर्दियों मे अधिक से अधिक समय तक नाइट रेस्क्यू करे। हमे यह भी कोशिश करना चाहिए कि अगर कोई बेघर अपना घर स्वेच्छा से जाना चाहता है तो उन्हे उसके घर तक पहुँचाने मे मदद करना चाहिए। सरकार द्वारा दी जाने वाली राशि का सदुपयोग हो सके। कोशिश करे कि ठंड से बेघर को खुले-आसमान के नीचे दम तोड़ना न पडेँ।

म गोपाल सिंह पिता - चतर सिंह, गाँव - शिवपुरा, थाना -  
दादाबाड़ी, जिला - काँटा का रहने वाला हूँ। मैं  
पिछले 15 साल से बेघर हूँ। मैं पिछले एक  
साल से दिल्ली के रैनबसेरा में रह रहा हूँ।  
मेरे बारे में लिखी गई बात को मैंने सुना  
है। मेरे बारे में लिखी गई सूचना से मैं  
सहमत हूँ।



गोपाल सिंह

दिनांक - 30/1/2015

नाइट शैल्टर नं० - 97

दांडी पार्क, यमुना बाजार

मैं परविन्द्र सिंह नाइट शैल्टर संख्या 97  
का कथर लेकर हूँ। मेरे उपस्थिति में गोपाल  
सिंह का केस स्टडी गोपाल सिंह को पढ़  
कर सुनाया गया। गोपाल सिंह इस केस स्टडी  
में लिखी गई बातों को सुन कर सहमत है।

30/1/2015 Parwinder Singh

मैं ~~सुमिल~~ राज कुमार पिता - युवा मंत्री काल  
 2113 - मिना - विराट नगर नया नया था -  
 विराट नगर जिला - कोशी - (नेपाल) का  
 रहने वाला हूँ। मैं विगत साल से  
 बेघर हूँ। मैं ~~कमल~~ है  $1\frac{1}{2}$  छठमास  
 मैं अच्छी तरह बात को मैंने पढ़ा है मैं अपने बारे  
 मैं अच्छी तरह सूचना के लिए सड़गत हूँ

Rajkumar

1/1/2015

N.S. 149 Yamuna Pustak

Delhi

मैं सुमिल कुमार नाइट शिल्पर संख्या - 149  
 का फंवर टेकर हूँ। मैंने उपस्थिति में राजकुमार  
 ने कस स्टडी पढ़ा। राजकुमार के बारे में लिखी  
 गई किसी भी सूचना से कोई आपत्ति नहीं है।

Sumil Kumar

Caro Takar